

# बहारे तहरीर

(हिस्सा 4)

مستطفا  
AM ABDE MUSTAFA

# ABOUT US

---

Abde Mustafa Official, a team from Ahle Sunnat Wa Jama'at  
Our motto : Serving Quraano Sunnat, preaching Ilme Deen and  
to reform people.

This team came into existence in the year 2012 and in very  
few years this team did a lot of acts.

There is also a special place of Abde Mustafa Official on  
social media networking sites.

Lots of people from all over the world are connected to us  
via Facebook, WhatsApp, Instagram, Telegram, YouTube and  
Blogger.

Abde Mustafa Official



## ABDE MUSTAFA OFFICIAL

[abdemustafaofficial.blogspot.com](http://abdemustafaofficial.blogspot.com)

## गधे की ताज़ीम

एक मर्तबा हुज़ूर -ए- अकरम ﷺ दराज़गोश पर सवार हो कर हज़रत सा'द बिन उबादा रदिअल्लाहु त'आला अन्हु की इयादत के लिए तशरीफ़ ले गए।

(بخاری، باب عیادة المریض را کبوا....، ر5663، ملقطاً)

इस हदीस की शरह करते हुए अल्लामा गुलाम रसूल सईदी अलैहिर्रहमा लिखते हैं कि इस हदीस में मज़कूर है के नबी -ए- करीम ﷺ गधे पर सवार हो कर हज़रत सा'द बिन उबादा की इयादत के लिए तशरीफ़ ले गए इस लिए गधे पर सवार होने को हक़ीर नहीं समझना चाहिए।

मुल्ला अली क़ारी हनफ़ी अलैहिर्रहमा ने (तो यहाँ तक) लिखा है के जो शख्स गधे पर सवारी को कमतर और हक़ीर जानता है वो खुद गधे से भी ज़्यादा कमतर और हक़ीर है और इस हदीस से ये भी मालूम हुआ के गधे पर सवार होना सुन्नत है। गांव और देहात में गधे पर सवारी के मवाक़े हैं।

(انظر: نعم الباری فی شرح صحیح البخاری، ج11، ص923)

सुब्हान अल्लाह! जिस चीज़ को हुज़ूर ﷺ से निस्बत हो जाए वो भी मुअज़्ज़म हो जाती है।

हुज़ूर ﷺ से मुहब्बत करने वाले उन तमाम चीज़ों से मुहब्बत करते हैं जिस की निस्बत हुज़ूर ﷺ से हो।

ये कैसा अक़ीदा है के हुज़ूर ﷺ के इल्म को जानवरों और पागलो से तशबीह दी जाए और फिर ईमान का और इश्क़ -ए- रसूल ﷺ का दावा किया जाए?

इश्क़ तो ये कहता है के जिस गधे पर नबीयों के इमाम ने सवारी फरमाई है अब उस सवारी को हक़ीर समझने वाला खुद गधे से ज़्यादा कमतर है।

## अब्दे मुस्तफ़ा

## कहने से पहले करो भी

एक बुजुर्ग के पास एक औरत अपने बच्चे को ले कर आयी और कहने लगी : इस बच्चे को गुड़ खाने से मना फरमा दें।



बुजुर्ग ने कहा कि वो उस बच्चे को दूसरे दिन लेकर आये।

जब वो औरत दूसरे दिन बच्चे को लेकर आयी तो बुजुर्ग ने बच्चे से फरमाया : बेटा, गुड़ मत खाया करो.....,

बच्चे की माँ बोली : हज़रत ये नसीहत तो आप कल भी कर सकते थे (फिर दूसरे दिन क्यों बुलाया?)

बुजुर्ग फरमाने लगे : कल ऐसा करना नामुमकिन था क्योंकि कल मैंने खुद गुड़ खाया हुआ था!

(انظر: آداب استاد و شاگرد، ص 33)

दूसरों को नसीहत के फूल बांटने से पहले हमें खुद को देखना चाहिये कि हमने कितनी बातों पर अमल किया है अगर हम अमल के बाद दूसरों को नेकियों की दावत देंगे तो हमारी दावत क़बूल होती हुई नज़र आयेगी।

## अब्दे मुस्तफ़ा

### हुज़ूर ﷺ की 8 अदाएं

नबीये करीम ﷺ की हर अदा प्यारी है जिन में से ये 8 भी है :-

(1) जब भी कोई आप ﷺ को पुकारता तो आप ﷺ "लब्बैक" कह कर जवाब देते।

(الشفاء، 1/121)

(2) अगर कोई शख्स आप ﷺ के कान में सरगोशी करता तो जब तक उसकी बात मुकम्मल न हो जाती आप ﷺ अपना सर मुबारक उससे दूर न फरमाते।

(ایضاً)

(3) आप ﷺ मजलिस में कभी पाँव फैला कर न बैठते।

(ایضاً)

(4) जब कोई मुलाकात के लिए आता तो बाज़ अवकात उसके लिए आप ﷺ अपनी चादर बिछा देते बल्कि अपनी मसनद भी पेश कर दिया करते।

(الشفاء، 1/122)

(5) आप ﷺ सहाबा -ए- किराम को उन की कुन्नियत और पसन्दीदा नामो से पुकारते।

(ایضاً)

(6) आप ﷺ बड़ी वक्रार के साथ इस तरह ठहर ठहर कर गुप्तगू फरमाते के अगर कोई आप ﷺ जुमलो को गिनना चाहता तो गिन सकता था।

(ایضاً، 1/139)

(7) आप ﷺ रफ्तार के साथ झुक कर यूँ चला करते थे गोया बुलंदी से उतर रहे है, हज़रत अबु हुरैरा कहते है के हम रसूलुल्लाह ﷺ के साथ चलने में हाँफने लगते थे।

(شمال ترمذی، ص 86)

(8) आप ﷺ खुशबू का तोहफा वापस नही फरमाते बल्कि फरमाते के खुशबू का तोहफा रद मत करो क्योंकि ये जन्नत से निकली है।

(ایضاً، ص 130)

**अब्दे मुस्तफ़ा**

### **एक तरफ इल्मे दीन और एक तरफ बेटे का जनाज़ा**

इमाम अबु यूसुफ रहिमहुल्लाहु त'आला के बेटे का जब इंतेक़ाल हो गया तो आप ने एक शख्स को इसे दफन करने की ज़िम्मेदारी सौंप दी और खुद इमाम अबु हनीफा रहिमहुल्लाहु त'आला की मजलिस में इल्मे दीन सिखने चले गए और कहने लगे के कहीं मेरा आज का सबक छूट ना जाये!

(المستطرف فی کل فن مستطرف، جلد 1، صفحہ نمبر 76)

जुबान से इज़हार करने वाले तो काफ़ी मिलेंगे लेकिन अस्ल में इसे कहते है इल्मे दीन हासिल करने का जज़्बा!

ऐ काश के हमारे नौजवानों के अंदर भी ऐसा जज़्बा पैदा हो जाये.....,

**अब्दे मुस्तफ़ा**

## बस तुम्हारी लगन

हज़रते सुल्तानुल आरिफीन, सुल्तान बाहू रहीमहुल्लाह त'आला ज़मीन (खेत) में हल चला रहे थे कि हिन्दुओं की एक बारात का वहां से गुज़र हुआ जो अपना रास्ता भूल चुकी थी।

उस बारात को क़रीब के एक गांव अहमदपुर जाना था, उन्होंने आप अलैहिर्हिहमा से पूछा कि हमें अहमदपुर जाना है, रास्ता किधर से है?

आपने फरमाया : बता दूँ या पहुंचा दूँ?

ये जवाब सुनकर वो लोग हैरान हुये फिर कहने लगे कि बाबा जी! पहुंचा दो आपने फरमाया कि आँखे बंद करो..... अब खोलो, आँखें खुली तो रोज़ा -ए- रसूल ﷺ

सामने था और बारात मदीना -ए- मुनव्वरा में खड़ी थी!

उन्होंने कहा कि बाबा जी! ये (तो वो) अहमदपुर नहीं है जहाँ हम ने जाना है तो आपने फरमाया कि मैं तो इसी अहमदपुर को जानता हूँ!

(ملخصاً: شرح حدائق بخشش، ص 159)

हुज़ूर ﷺ से सच्ची मुहब्बत करने वाले हमेशा आप ﷺ की यादों में खोए रहते हैं, उनकी नज़रों में बास मदीने की तसवीर होती है, उन्हें हर वो महफिल पसन्द आती है जिसमें हुज़ूर ﷺ की बातें हों, हर वो ज़िक्र सुहाना लगता है जिसमें हुज़ूर ﷺ का ज़िक्र शामिल हो, बस उन्हीं की लगन.....

इन्हें जाना, इन्हें माना, ना रखा ग़ैर से काम

लिल्लाहिल हम्द मै दुनिया से मुसलमान गया।

अब्दे मुस्तफ़ा

## हमारे नौजवान और सोशल मीडिया

इस ज़माने में अब बहुत कम लोग ऐसे बचे हैं जो सोशल मीडिया से दूर हैं।

टीवी, मोबाइल फोन और इन्टरनेट के ज़रिये हर शख्स पूरी दुनिया से ऐसा जुड़ा हुआ है जैसे दो उंगलियाँ।

दुनिया के एक कोने में कुछ होता है तो हज़ारों मील दूर दूसरे कोने में फौरन खबर पहुँच जाती है।

सोशल नेटवर्किंग वेबसाइट्स के ज़रिये मुक्तलिफ शहरों के रहने वाले एक दूसरे को दोस्त बना रहे हैं, इन वेबसाइट्स में फेसबुक, वॉट्सएप्प, ट्विटर, इंस्टाग्राम, टेलीग्राम और वीडियो कॉलिंग एप्स बहुत मशहूर हैं।

नौजवानों की अक्सरियत सोशल मीडिया पर मौजूद है, शहर क्या और देहात क्या हर जगह सोशल मीडिया का जाल बिछा हुआ है।

### **फायदा भी नुकसान भी :-**

जहाँ एक तरफ लोगों को सोशल मीडिया से बहुत बड़ा फायदा हुआ है वहीं दूसरी तरफ बहुत बड़ा नुकसान भी हुआ है फायदे और नुकसान का दारोमदार इसके इस्तिमाल पर है, अगर आप इसका सहीह इस्तिमाल करते हैं तो ये मुफीद है वर्ना मुदरा।

### **नौजवानों के हालात :-**

कई नौजवानों की टाईम लाईन, स्टेटस और तस्वीर ऐसी होती हैं कि अगर उनके वलिदैन या घर वाले देख लें तो शर्म से पानी पानी हो जायें!

टाईम लाईन पर बेहूदा लतीफे, गंदी गंदी तस्वीरें और गैर अख्लाकी तहरीरें मौजूद होती हैं।

अगर कभी कभार दीनी जज़्बा पैदा हो भी गया तो ये तहरीरें शेयर करते हैं कि "ये मेसेज 11 लोगों को भेजो तो खुशखबरी मिलेगी", "इस महीने की मुबारकबाद दो तो जन्नत में जाने से कोई नहीं रोक सकता", "आज सैय्यदा फातिमा का यौम -ए- विलादत है" (जो कि सोशल मीडिया पर रोज़ होता है) वगैरा।

अगर दीन के लिये जज़्बात ज़्यादा बढ़ गये तो फिर ये मेसेज शेयर करते हैं "एक फिल्म रिलीस हो रही है अल्लाह के बन्दे....." बाकी तो आप जानते ही हैं।

### **सहीह इस्तिमाल :-**

अगर आप फेसबुक, वॉट्सएप्प, ट्विटर, और इंस्टाग्राम वगैरा के इस्तिमाल करते हैं तो उन्हीं लोगों को फोलोव करें या फ्रेंड (दोस्त) बनायें जिनकी तहरीरें (पोस्ट्स), ट्वीट्स, फोटोज़, और वीडियोज़ वगैरा से आपके इल्म में इज़ाफ़ा हो या कोई अच्छी चीज़ सीखने को मिले, मिसाल के तौर पर उलमा -ए- अहले सुन्नत को फॉलो करें,

इस्लामिक पेजेस को लाइक करें, अपने दोस्त और रिश्तेदारों जो इन वेबसाइट्स पर मौजूद हों, उन्हें लिस्ट में शामिल करें।

जहां कहीं कोई गैर मुनासिब चीज़ देखें तो फौरन उसके भेजने वाले को ब्लॉक करें।

**गलत इस्तिमाल :-**

सोशल मीडिया का गलत इस्तिमाल आपके गुनाहों में इज़ाफ़ा कर सकता है और ये भी हो सकता है कि आपको जेल की हवा खानी पड़े लिहाज़ा सियासी मामलात में बहस करने, किसी को गालियों भरा मेसेज करने और गैर अख़्लाकी तहरीरों या तस्वीरों पर तब्सिरा करने से इज्तिनाब करें।

**अब्दे मुस्तफ़ा**

**जन्नत में आधी आबादी हमारी होगी**

हज़रते अब्दुल्लाह बिन मसऊद रदिल्लैह त'आला अन्हु बयान करते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ ने हम से फरमाया के क्या तुम इस बात से राज़ी नहीं हो के जन्नत में तुम्हारी तादाद तमाम जन्नतियों की चौथाई हो?

हज़रत इब्ने मसऊद फरमाते हैं के हम ने खुशी से नारा -ए- तकबीर बुलंद किया फिर हुज़ूर ﷺ ने फरमाया के क्या तुम इस बात से राज़ी नहीं हो के जन्नत में तुम्हारी तादाद तमाम जन्नतियों की तिहाई हो?

हज़रत इब्ने मसऊद फरमाते हैं के हम ने खुशी से नारा -ए- तकबीर बुलंद किया फिर हुज़ूर ﷺ ने फरमाया :

मुझे उम्मीद है के जन्नत में तुम्हारी तादाद तमाम जन्नतियों से आधी (50%) होंगी।

(ملقطاً: صحيح مسلم، باب بيان كون هذه الامة.... الخ، ر437)

हज़रत अबु सईद खुदरी रदिल्लैह त'आला अन्हु की रिवायत में है के आप ﷺ ने इरशाद फरमाया के उस ज़ात की कसम जिस के क़ब्ज़े क़ुदरत में मेरी जान है मेरी ख्वाहिश है की तुम तमाम जन्नतियों के निस्फ (आधे) हो।

(ايضاً، ر440، ملقطاً)

इस उम्मत पर ये महरबानी सिर्फ और सिर्फ हुज़ूर ﷺ की वजह से है।



इस हदीस से उन फिरको का रद्द भी हो जाता है जिन की तादाद एक शहर भरने के बराबर भी नहीं, वो भला आधी जन्नत कैसे भरेगे?

अलहम्दुलिल्लाह हुज़ूर ﷺ ने ये बिशारत सवादे आज़म,अहले सुन्नत व जमाअत को अता फरमाई है।

## अब्दे मुस्ताफ़ा

### अज़ान -ए- बिलाल और सूरज का निकलना

आवामुन नास से लेकर खवास तक एक वाक़िया बहुत मशहूर है कि हज़रते सय्यिदुना बिलाल रदिअल्लाहु त'आला अन्हु की जुबान में लुक्रत थी जिसकी वजह से आप रदिअल्लाहु त'आला अन्हु अज़ान के कालिमात को सहीह तौर पर अदा नहीं कर पाते थे, एक मर्तबा आपको अज़ान देने से रोका गया और जब आपने अज़ान नहीं दी तो सूरज ही नहीं निकला!

ये भी कहा जाता है कि हज़रते बिलाल रदिअल्लाहु त'आला अन्हु की "सीन" अल्लाह त'आला के नज़दीक "शीन" है।

इस वाक़िये को कूछ मुक़र्रिरीन बड़े शौक से बयान करते हैं और कुछ लोगों को भी ऐसी मसालेदार रिवायत सुनने में बड़ा मज़ा आता है।

कई मुअ़तबर उलमा ने इस रिवायत का रद्द किया है और इसे मौज़ू व मनघढ़त करार दिया है लेकिन फिर भी कुछ मुक़र्रिरीन अपनी आदत से मजबूर हैं, मुक़र्रिरीन की पेशावराना मजबूरी उन्हें ऐसी रिवायत छोड़ने नहीं देती।

ज़रा सा झूठ ज़रूरी है दास्तान के लिये

इस रिवायत के मुतअल्लिक़ उलमा -ए- मुहक्किकीन की आरा ज़ेल में नक्ल की जाती हैं :-

(1) इमाम इब्ने कसीर (मुतवफ़्फ़ा 774 हिजरी) इस रिवायत के बारे में लिखते हैं कि इसकी कोई असल नहीं है।

(البدایة والنّهاية، ج 5، ص 477)

(2) इमाम शैख अब्दुर रहमान सखवी (मुतवफ़्फ़ा 904 हिजरी) इस रिवायत को नक़ल करने के बाद बुरहान सफ़ाक़ूसी के हवाले से अल्लामा जमालुद्दीन अल मिज़ज़ी के क़ौल को नक़ल करते हैं कि ये रिवायत अवाम की जुबान पर तो मशहूर हैं लेकिन हमने किसी भी किताब में इसे नहीं पाया।

(المقاصد الحسنة، ص 190، ر 221)

(3) इमाम सखवी एक और मक़ाम पर लिखते हैं कि इब्ने कसीर ने कहा है की इसकी कोई असल नहीं है और इसी तरह अल्लामा जमालुद्दीन अल मिज़ज़ी का क़ौल गुज़र चुका।

(ایضاً، ص 397، ر 582، ملقطاً)

(4) अल्लामा अब्दुल वहहाब शारानी (मुतवफ़्फ़ा 973 हिजरी) इस रिवायत के बारे में फरमाते हैं कि ये आवाम की जुबान पर तो मशहूर है लेकिन उसूल में हमने इस बारे में कोई तायीद नहीं देखी।

(البدور المنير في غريب احاديث البشير والنذير، ص 117، ر 915 به حواله جمال بلال)

(5) अल्लामा शारानी मज़ीद लिखते हैं कि इब्ने कसीर कहते हैं कि इसकी कोई असल नहीं।

(ایضاً، ص 186، ر 1378)

(6) इमाम मुल्ला अली क़ारी हनफ़ी (मुतवफ़्फ़ा 1014 हिजरी) ने भी इस रिवायत को मौजू़ करार दिया है।

(الاسرار المرفوعة في الاخبار الموضوعة المعروف بالموضوعات الكبرى، ص 140، ر 76)

(7) अल्लामा बदरुद्दीन ज़रकशी (मुतवफ़्फ़ा 794 हिजरी) इस रिवायत को नक़ल करने के बाद लिखते हैं कि हाफ़िज़ जमालुद्दीन अल मिज़ज़ी फरमाते हैं कि ये रिवायत आवाम की जुबान पर तो मशहूर है, लेकिन इस बारे में हमने उम्महातुल कुतुब में कुछ भी नहीं देखा और इस रिवायत के बारे में शैख बुरहानुद्दीन सफ़ाक़ूसी का भी यही क़ौल है।

(الآلئ المنثورة في الاحاديث المشهورة، ص 207، 208)

(8) अल्लामा इब्नुल मुबरद मुकद्दसी (मुतवफ़्फ़ा 909 हिजरी) इस रिवायत को लिखने के बाद अल्लामा जमालुद्दीन अल मिज़्ज़ी के क़ौल नक़ल करते हैं कि मुस्तनद कुतुब में इसका कोई वुजूद नहीं है।

(التخريج الصغير والتجيب الكبير، ص 109، ر 554)

(9) अल्लामा इस्लाम बिन मुहम्मद अल अजलूनी (मुतवफ़्फ़ा 1162 हिजरी) इस रिवायत को लिखने के बाद इमाम जलालुद्दीन सुयूती का क़ौल नक़ल करते हैं कि उम्मातुल कुतुब में ऐसा कुछ भी वारिद नहीं हुआ और इमाम मुल्ला अली क़ारी फरमाते हैं कि इसकी कोई अस्ल नहीं और अल्लामा जमालुद्दीन अल मिज़्ज़ी से नक़ल करते हुये शैख बुरहानुद्दीन सफ़ाक़ूसी फरमाते हैं कि ये आवाम की जुबान पर तो मशहूर है लेकिन अस्ल कुतुब में ऐसा कुछ भी वारिद नहीं हुआ।

(كشف الخفاء ومزيل الإلباس، ص 260، ر 695)

(10) अल्लामा अजलूनी मज़ीद लिखते हैं कि इब्ने कसीर कहते हैं कि इसकी कोई अस्ल नहीं है।

(أيضاً، ص 530، ر 1520)

(11 से 15) इस रिवायत का रद्द इन कुतुब में भी मौजूद है :-

- "تميز الطيب من الخبيث"، "تذكرة الموضوعات للهندي"، "الدرر المنتشرة للسيوطي"، "الفوائد للكرمي"، "اسنى المطالب"

(16) अल्लामा शरीफुल हक़ अमजदी (मुतवफ़्फ़ा 1421 हिजरी) लिखते हैं कि ये वाक़िया बाज़ किताबों में दर्ज है लेकिन तमाम मुहद्दसीन का इस पर इत्तिफ़ाक़ है कि ये रिवायत मौज़ू, मनघढ़त और बिल्कुलिया झूठ है।

(فتاوى شارح بخارى، ج 2، ص 38)

(17) अल्लामा अब्दुल मन्नान आज़मी (मुतवफ़्फ़ा 1434 हिजरी) लिखते हैं कि हज़रते बिलाल रदीअल्लाहु त'आला अन्हु को अज़ान से माज़ूल करने का ज़िक्र हमको नहीं मिला बल्कि अयनी, जिल्द पन्जुम, सफ़हा नम्बर 108 में है कि हज़रते बिलाल रदीअल्लाहु त'आला अन्हु रसूलुल्लाह ﷺ के लिये सफ़र और हज़र हर दो हाल में

अज़ान देते और ये रसूलुल्लाह ﷺ और हज़रते सिद्दीक़ -ए- अकबर रदिल्लाहु त'आला अन्हु दोनों की आखिरी ज़िन्दगी तक मुअज़्ज़िन रहे।

(فتاویٰ بحر العلوم، ج 1، ص 109)

(18) मौलाना गुलाम अहमद रज़ा लिखते हैं कि ये वाक़िया मौजूब मानव है, हकीकत से इसका कोई ताल्लुक नहीं है कि हज़रते बिलाल रदिल्लाहु त'आला अन्हु से कालिमात -ए- अज़ान सहीह (तौर पर) अदा नहीं हो पाते थे।

(ملقطاً: فتاویٰ مرکز تربیت افتاء، ج 2، ص 647)

इन दलाइल के बाद अब इस रिवायत के मौजूब मानव होने में कोई शक बाक़ी नहीं रहता।

## अब्दे मुस्तफ़ा

### मुहद्दीसीन का एहसान

हारून रशीद के पास एक ज़िन्दीक को लाया गया, खलीफ़ा ने उस के क़त्ल का हुक्म सादिर किया तो उस ने कहा :

तुम मुझे क़त्ल कर दोगे लेकिन उन चार हज़ार (4000) अहादीस का क्या करोगे जिन को मैंने वद'अ कर के (यानी घड़ कर) लोगों में आम कर दिया है! उन (चार हज़ार) में से कोई बात रसूलुल्लाह ﷺ से मन्कुल नहीं थी।

खलीफ़ा ने कहा के ए ज़िन्दीक! तू अब्दुल्लाह बिन मुबारक और इब्ने इस्हाक़ को नहीं जानता, उन की तनकीद की छत्री से तेरी तमाम हदीसों का एक एक हर्फ़ निकल आएगा।

(تاریخ دمشق، ج 4، ص 115 به حواله شان حبیب المنعم من روایات المسلم)

ये तो सिर्फ़ एक शख्स का वाक़िया है जिस ने चार हज़ार अहादीस घड़ कर आम की, इस के इलावा कई लोगो का ज़िक्र तारीख में मिलता है जिन्होंने हदीसे घड़ीं बल्कि कई फिरको ने इस पर ज़ोर दिया और इस के ज़रिए अवाम को गुमराह करने की कोशिश की लेकिन इस उम्मत पर मुहद्दीसीन -ए- किराम का बहुत बड़ा एहसान है जिन्होंने अपनी तहकीक़ व तनकीद की छत्री में हदीस -ए- रसूल ﷺ को मनघढ़त

रिवायात से अलग किया और आज भी मुहक्किनीन इस एहम तरीन काम मे मसरूफ है।

किसी भी रिवायत को बयान करने पहले ये देख लें के वो किस किताब में मौजूद है और ये भी ज़रूरी नहीं के किताब में होने की वजह से वो सहीह हो क्योंकि किताबों में भी झूटी रिवायात होती है लिहाज़ा ये भी देखना चाहिए के उस रिवायत पर उलमा - ए- अहले सुन्नत कि क्या तहक़ीक़ है अगर आप ने कभी ऐसी रिवायत बयान कर दी या लिख दी जो सहीह नहीं थी तो इल्म हो जाने पर अपनी ग़लती को फौरन तस्लीम करे बजाए हठधर्मी करने के, क्योंकि इस पर इसरार करना मज़ीद एक बड़ी ग़लती है।

### अब्दे मुस्तफ़ा

#### मैं उसे सुन्नी बना दूँगा

इमरान बिन हित्तान रक्काशी अकाबिर उलमा -ए- मुहद्दीसीन में से थे, उन की एक चचा ज़ाद बहन खारजीया (एक गुमराह फिरके से) थी, उस से निकाह कर लिया!

उलमा -ए- किराम ने सुनकर ताना ज़नी की तो उन्होंने कहा : मैंने तो इसलिये निकाह किया है कि इसको अपने मज़हब पर ले आऊँगा।

एक साल ना गुज़रा था कि खुद खारजी हो गये!!!

(الإصابة في تمييز الصحابة، ج 5، ص 233 به حواله ملفوظات اعلیٰ حضرت)

शिकार करने चले थे खुद शिकार हो बैठे

इसी तरह आज भी कुछ सुन्नी लड़के बद मज़हबों के घर से लड़की लाते हैं और कहते हैं कि मैं इसे सुन्नी बना दूँगा लेकिन होता कुछ और है!

निकाह करते वक़्त सबसे पहले हमें एक दूसरे के दीन को मल्हूज़ रखना चाहिये, अगर लड़की या लड़का बद-मज़हब है तो हरगिज़ उनसे रिश्ता ना जोड़ें।

### अब्दे मुस्तफ़ा



## दो रजिस्टर

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रदिल्लाहु त'आला अन्हु बयान करते हैं कि एक दिन हुज़ूर ﷺ हमारे पास तशरीफ़ लाये, आपके हाथों में दो किताबें थीं।

आप ﷺ ने दरयाफ़्त फरमाया कि क्या तुम जानते हो कि ये दो किताबें किस चीज़ से मुताल्लिक़ है?

हम ने अर्ज़ किया : नहीं, या रसूलुल्लाह! ﷺ आप ही हमें बताएं,

हुज़ूर ﷺ ने अपने दायें हाथ वाली किताब के बारे में फरमाया कि ये किताब रब्बुल आलमीन की तरफ से है जिसमें अहले जन्नत के नाम हैं, इन के आबा व अजदाद और क़बीलों के नाम हैं फिर इसके आखिर में मुहर लगा दी गयी है, इन में कोई इज़ाफ़ा नहीं हो सकता और कमी भी नहीं हो सकती।

इसके बाद आप ﷺ ने अपने बायें हाथ में मौजूद किताब के बारे में इसी तरह के अल्फ़ाज़ अहले जहन्नम के मुताल्लिक़ इरशाद फरमाये।

(ملخصاً وملتقطاً: الجامع الترمذی، باب ما جاء ان الله كتب كتاباً لاهل الجنة واهل النار، 2141ح)

यहाँ ये सवाल पैदा होता है कि एक किताब में तमाम जन्नतियों और दूसरी किताब में जहन्नमियों के नाम, उनके बाप दादों के नाम और उनके क़बीलों के नाम कैसे मौजूद हो सकते हैं हालांकि वो किताब हुज़ूर ﷺ के हाथों में थी और सहाबा-ए-किराम ने उन्हें देखा भी लिहाज़ा ज़ाहिर है कि किताब का हज़्म मुख्तसर होगा यानी किताब की लंबाई, चौड़ाई और मोटाई मुख्तसर होगी जबकि जन्नतियों और जहन्नमियों के नामों की तादाद बहोत ज़्यादा है जो एक मुख्तसर सी किताब में अक्लन नहीं आ सकते और हुज़ूर ﷺ का फरमान भी गलत नहीं हो सकता.....!

हज़रत अल्लामा सय्यिद अब्दुल अज़ीज़ दब्बाग़ रहीमुल्लाहु त'आला (मुतवप्फा 1131 हिजरी) इस हदीस की तशरीह करते हुये फरमाते हैं कि इस हदीस में किताबत से मुराद तहरीरी शक्ल नहीं है बल्कि इसका मतलब ये है कि जब आप ﷺ ने किताब के अवराक़ की तरफ तवज्जोह फरमाई तो अहले जन्नत व जहन्नम के तमाम नाम आप ﷺ को दिखाई दिये।

इसकी मज़ीद वज़ाहत यूँ की जा सकती है कि जिस वक्त हुज़ूर ﷺ किसी भी चीज़ पर नज़रे मुबारक डालते हैं तो आपके सामने से तमाम हिजाबात उठा लिये जाते हैं। अल्लाह त'आला ने आपको कामिल तरीन रुहानी बसीरत अता फरमाई है और जब ये रुहानी बसीरत आपकी ज़ाहिरी बसारत के साथ मिल जाये तो आपकी ज़ाहिरी आंखों के सामने से भी तमाम हिजाबात हट जाते हैं। इसलिये आप ﷺ किसी भी महबूब चीज़ को उसी शय में देख लेते हैं जो उस वक्त आपके सामने मौजूद हो। बिलफर्ज़ अगर आपके सामने कोई दीवार मौजूद हो तो आप दीवार में (भी) उस छुपी चीज़ का मुशाहिदा फरमायेंगे और अगर उस वक्त आप का दस्त -ए- अक्रदस आप के सामने होगा तो वही चीज़ आप को अपने हाथ में नज़र आयेगी और अगर आप के सामने कोई कागज़ मौजूद हो तो वो छुपी चीज़ आप को कागज़ में नज़र आएंगी।

(ملقطاً: الأبريز، سيد عبد العزيز دباغ رحمه الله تعالى، ص 97، 98)

मज़कूरा तशरीह को सामने रख कर ये कहा जा सकता है के अगर वो किताबे किसी आम इंसान को दे दी जायें तो वो उसमे अहले जन्नत व जहन्नम के नामों को नही देख पायेगा।

किताब तो है पर देखने वाली आंख भी चाहिये।

**और कोई ग़ैब क्या तुम से निहा हो भला  
जब न खुदा ही छुपा तुम पे करोड़ो दुस्स**

**अब्दे मुस्ताफ़ा**

**मुझे मालूम नहीं**

इमाम शयबी रहीमहुल्लाहु त'आला के बारे में अम्र बिन अबी ज़ाइद कहते हैं कि किसी सवाल के जवाब में इमाम शयबी से ज़्यादा मैंने किसी को भी कसरत से यह कहते हुये नहीं सुना कि मुझे मालूम नहीं। यानी इमाम शयबी अक्सर सवालों के जवाब में ये कहते थे कि "मुझे मालूम नहीं"।

(دارمی به حواله انباء الحی، مترجم، ص 269)

ये कहना कितना मुश्किल है कि मुझे नहीं मालूम या मैं नहीं जानता! अगर दो चार लोगों के बीच किसी आलिम को ये कहना पड़ जाये तो क्या होगा? माना कि ये कहने में झिझक महसूस होगी लेकिन भलाई इसी में है कि गलत बयानी का सहारा लेने के बजाए कह दिया जाये कि "मुझे मालूम नहीं"।

## अब्दे मुस्ताफा

### रिमिक्स नात - इश्क़ या तौहीन

ये बयान करते हुए भी तकलीफ़ होती है के कुछ लोगो ने नात - ए- रसूल ﷺ जैसी मुक़द्दस शै को भी खेल कूद और नाचने गाने का ज़रिया बना लिया है! एक ऐसी बला हमारे मुआ'शरे में उतरी है जिस की जितनी मज़म्मत की जाए कम है। हम बात कर रहे है "रिमिक्स नात" की, इस मे होता ये है के असल नात को कुछ सॉफ्टवेअर्स के ज़रिए रीमिक्स किया जाता है यानी इस मे जदीद मज़ामीर (म्यूजिकल इंस्ट्रूमेंट) की आवाज़ को मिलाया जाता है जिस तरह फिल्मी गानों में मज़ामीर की आवाज़े होती है। ये आवाज़े (साउंड) कई तरह की होती है जिन्हें निकालने के लिए किसी ढोल को बजाने या बाँसुरी में फूँकने की ज़रूरत नही होती बल्कि ये सॉफ्टवेयर्स के ज़रिए बनाई जाती है। धमक की आवाज़ जिसे "बीट" कहा जाता है उस के साथ कई तरह की आवाज़े मिला कर नात को ऐसी शक्ल दी जाती है के सुनने से फिल्मी गाना मालूम होता है। वो मुक़द्दस अश'आर जिन में अल्लाह के प्यारे रसूल ﷺ की तारीफ़ -ओ- तौसीफ़ बयान की जाती है उन को गाने की तरह रीमिक्स बनाना और फिर उसे बुलंद आवाज़ से जुलूस व महाफ़िल में बजाना इश्क़ -ए- रसूल है या तौहीन? एक आम इंसान भी गौर करे तो उसे मालूम हो जायेगा के ये कितनी घटिया हरकत है, इस बला में एक अच्छी खासी तादाद मुब्तला है! पहेले से ही फिल्मी गानों का भूत बचपन से पचपन के सरो पर सवार है, ये क्या कम था जो नात -ए- रसूल ﷺ की इज़ज़त को पामाल करने पर उतर आए!

हम आप से गुजारिश करते हैं के लिल्लाह इस से तौबा करे और रीमिक्स नात का बॉयकॉट करे।

## अब्दे मुस्तफ़ा

### आपने सच फरमाया मेरे आका

हज़रते सैय्यिदुना अबु हु़रैरा रदिल्लाहु त'आला अन्हु बयान करते हैं कि नबी -ए- करीम ﷺ ने इरशाद फरमाया :

उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ा -ए- क़ुदरत में मुहम्मद की जान है! तुम लोगों पर ज़रूर एक दिन ऐसा आयेगा कि तुम मुझे नहीं देख सकोगे और मेरी ज़ियारत करना तुम लोगों के नज़दीक अहल (घर वालों) और माल से ज़्यादा महबूब होगा।

(सहीح मुसलम, باب فضل النظر اليه ﷺ وتمنيته، ج 6008)

अल्लामा खिताबी लिखते हैं कि (हुज़ूर के विसाल के बाद) बाज़ सहाबा ने (तो यहाँ तक) कहा कि रसूलुल्लाह ﷺ की तदफ़ीन -ए- मुबारक के बाद हम खुद अपने आपको अजनबी लगते थे।

(شرح صحيح مسلم للسعيدى، جلد سادس، كتاب الفضائل، ص 828، ملقطاً)

## अब्दे मुस्तफ़ा

### टिक टोक

शायद ही कोई ऐसा शख्स होगा जो अपने स्मार्ट फोन से सोशल मीडिया का इस्तिमाल करता हो और "टिक टोक" से बे खबर हो।

अगर आप नहीं जानते तो हम बता दें कि ये एक सॉफ़्टवेयर है, जिसमें आप छोटी वीडियो (शॉर्ट क्लिप) बना सकते हैं और आम (शेयर) कर सकते हैं।

इसमें मुख्तलिफ़ ढंग से वीडियो बनायी जाती हैं मसलन कोई नाच रहा है, कोई गा रहा है, कोई उछल कूद कर रहा है, तो कोई करतब दिखा रहा है।

इस ऐप्लिकेशन ने हर शख्स को ये मौक़ा दिया है कि बिना फिल्मों में काम किये आप अपने करतब, अपने हुनर और अपनी कला (आर्ट) को दुनिया के सामने पेश कर सकते हैं। छोटे हों या बड़े, लड़के हों या लड़कियाँ सब मदारी बने हुये हैं।

इसमें बे-हयाई, बे अदबी और बे शर्मी की हदें पार की जा रही हैं, ये सिर्फ एक ऐप्लिकेशन नहीं बल्कि ऐसा आला (टूल) है जो लोगों के अन्दर शर्मी हया नाम की चीज़ को खत्म कर रहा है।

हो गयी महफिल तेरी क्या बे अदब बे क़ाइदा

जो खड़े रहते थे वो अब हैं बराबर बैठे

इस टिक टोक ने सिर्फ दो से तीन सालों में पाँच करोड़ से ज़्यादा लोगों को अपने जाल में फँसा लिया है!

उन करोड़ों लोगों में ना जाने कितने मुस्लिम नौजवान और लड़कियाँ शामिल हैं जो दिन रात अपनी नुमाईश के नशे में चूर हैं।

वो नौजवान जिन्हें अपने दीन के लिये खून पसीना एक करना चाहिये था वो अपना ढेर सारा वक़्त इस बेहूदा चीज़ में बरबाद कर रहे हैं, वो लड़कियाँ जिन्हें अपनी आखिरत की फिक्र में डूबे रहना चाहिये था वो दुनिया को अपने पीछे खड़ा करने की धुन में हैं।

आपके पास अक्ल है, सोचने समझने की सलाहियत है और वक़्त भी है लिहाज़ा गौर करें और पहचाने कि आपका फायदा कहाँ है।

इस ऐप्लिकेशन की नुहूसत से बचें और अपना वक़्त अच्छे कामों में लगायें, क्योंकि ये वक़्त दुबारा नहीं मिलने वाला।

हज़रते सैफ यमानी अलैहिर्रहमा फरमाते हैं कि अल्लाह त'आला का किसी बन्दे से अपनी नज़रे रहमत को हटा लेना ये है कि बन्दा बेकार बातों में मशगूल हो जाये और जो अपने मक़सद -ए- हयात को फरामोश करके अपनी उम्र का एक लम्हा भी गुज़रे तो उसे ज़रूर हसरतों और नदामतों का सामना करना पड़ेगा।

(وقت ہزار نعمت، ص 114)

**अब्दे मुस्तफ़ा**

**सवालात -ए- क़ब्र सुर्यानी जुबान में होंगे**

इमाम -ए- अहले सुन्नत, आला हज़रत रहीमहुल्लाह त'आला से अर्ज़ किया गया कि मरने के वक़्त से जुबान अरबी हो जाती है? आपने फरमाया कि इस बारे में तो कुछ



हदीस में इरशाद नहीं हुआ, हज़रत सैय्यिदी अब्दुल अज़ीज़ दब्बा'ग रदीअल्लाहु त'आला अन्हु फरमाते हैं कि क़ब्र में सुरयानी जुबान में सवाल होगा और कुछ लफ़्ज़ भी बताए हैं।

(ملفوظات اعلیٰ حضرت، ج 4، ص 447)

शैख अहमद बिन मुबारक (मुतवफ़्फा 1155 हिजरी) कहते हैं कि मैंने (अपने शैख, हज़रत अल्लामा सैय्यद अब्दुल अज़ीज़ दब्बा'ग रदीअल्लाहु त'आला अन्हु से) दरयाफ़्त किया कि क़ब्र में सवालात सुरयानी जुबान में होंगे? क्योंकि इमाम जलालुद्दीन सुयूती अलैहिर्रहमा की एक नज़्म में ये शेर मौजूद है:

ومن غریب ما ترى العینان

ان سوال القبر بالسریانی

"इन्सान के लिए हैरानगी की बात ये है कि क़ब्र में सुरयानी जुबान में मैय्यत से सवालो जवाब होंगे। "

इस नज़्म के शारेह बयान करते हैं कि इमाम सुयूती ने अपनी तसनीफ "शरहुस्सुदुर" में शैखुल इस्लाम अल्लामा इल्मुद्दीन के फतावा के हवाले से ये बात नक़ल की है कि क़ब्र में सुरयानी जुबान में मैय्यत से सवाल जवाब होगा।

इमाम सुयूती फरमाते हैं कि ताहम मुझे किसी हदीस में ये बात नहीं मिल सकी।

अल्लामा इब्ने हजर अस्क़लानी से यही सवाल किया गया तो उन्होंने जवाब दिया कि हदीस के अल्फ़ाज़ से ये ज़ाहिर होता है कि शायद क़ब्र में सवाल अरबी जुबान में होगा ताहम ये मुमकिन है कि हर शख्स से उसकी मखसूस जुबान में सवाल जवाब किया जायेगा और ये बात ज़्यादा माकूल महसूस होती है।

शैख अब्दुल अज़ीज़ दब्बा'ग रहीमहुल्लाह त'आला अलैह (मुतवफ़्फा 1131 हिजरी) ने जवाब में फरमाया कि क़ब्र में सवाल जवाब सुरयानी जुबान में होगा क्योंकि फरिश्ते और अरवाह यही जुबान बोलते हैं।

सवाल फ़रिश्ते करेंगे और जवाब रूह देगी क्योंकि जब रूह जिस्म से निकल जाए तो अपनी असल की तरफ लौट जाती है।

अल्लाह त'आला जब किसी वली को "फतह -ए- कबीर" (का मर्तबा) अता फ़रमाता है तो वो बाक्रायदा सीखे बगैर ही सुरयानी जुबान में गुफ़्तगू करने की सलाहियत हासिल कर लेता है क्योंकि उस वक़्त उस पर रुह का हुक्म ग़ालिब हो जाता है, इसलिए (रुह के ग़लबे के बाइस ही) मुर्दे को सुरयानी जुबान में गुफ़्तगू करते हुए कोई उलझन दरपेश नहीं होगी।

शैख़ सैय्यद अब्दुल अज़ीज़ दब्बा'ग़ रहीमहुल्लाह त'आला अलैह सुरयानी जुबान के मुताल्लिक़ तफ़सीली कलाम करते हुए फ़रमाते हैं कि अरवाह (रुहों) की जुबान सुरयानी है।

ये जुबान लफ़्ज़ी ऐतबार से बहुत मुख़्तसर और मानवी ऐतबार से इन्तिहाई वसी जुबान है। दूसरी कोई जुबान इस खूबी में इस के हम पल्ला नहीं हो सकती!

शैख़ अहमद बिन मुबारक कहते हैं कि मैंने दरियाफ़्त किया कि "क्या अरबी जुबान भी?"

आप अलैहिर्हमा ने फ़रमाया कि अरबी जुबान भी इस के हम पल्ला नहीं हो सकती अलबत्ता क़ुरआन में मौजूद अल्फ़ाज़ का हुक्म मुख़्तलिफ़ है।

अगर अरबी जुबान में सुरयानी के मुआनी को इकट्ठा कर लिया जाए और अल्फ़ाज़ अरबी जुबान के हो तो ये सुरयानी से भी शीरी और खूबसूरत जुबान होंगी।

सुरयानी के सिवा दुनिया की तमाम जुबानों में इतनाब (फैलाव) पाया जाता है।

सुरयानी जुबान के इलावा हर जुबान में अल्फ़ाज़ की तरकीब के ज़रिये जुमला बनता है लेकिन सुरयानी में हुरूफ़ के ज़रिए जुमला बनता है, यही वजह है कि सुरयानी जुबान के हुरूफ़ -ए- तहज्जी का मख़सूस माना है, जब एक हर्फ़ को दूसरे हर्फ़ से मिला दिया जाए तो जुमला मुकम्मल हो जाता है।

जिस शख्स को सुरयानी के हुरूफ़ का इल्म हो जाये वो आसानी के साथ सुरयानी जुबान बोल या समझ सकता है और आगे चल कर वो हुरूफ़ के असरार व मारिफ़त हासिल कर सकता है।

ये एक ज़बरदस्त इल्म है। अल्लाह त'आला ने लोगो पर रहमत करते हुए उन्हें इस इल्म से महजूब रखा है क्योंकि अगर वो इस से आगाह हो जाये तो उनकी ज़ात में मौजूद

जुलमत उनकी तबाही का बाइस बन जाये (क्योंकि वो इस इल्म को मनफ्री तौर पर इस्तेमाल करेंगे) हम अल्लाह त'आला से सलामती के तलबगार हैं।

जिस तरह ऊद की लकड़ी में रस (यानी पानी) मौजूद होता है इसी तरह सुरयानी जुबान दुनिया की हर जुबान में मौजूद है क्योंकि दुनिया की हर जुबान हुरूफ़ -ए- तहज्जी पर मुश्तमिल होती है और उन हुरूफ़ -ए- तहज्जी की वज़ाहत सुरयानी जुबान में की गयी है कि कौन सा हर्फ़ किस मखसूस मफ़हूम की अदायगी के लिए मखसूस है। जैसे अरबी जुबान में लफ़्ज़े "अहमद" है सुरयानी जुबान के ऐतबार से इस लफ़्ज़ के पहले हर्फ़ "अलीफ़" का अपना एक मखसूस माना है, इसी तरह जब आप "ह" को साकिन पढ़ेंगे तो उस का अपना मखसूस माना होगा, फिर "मीम" पर ज़बर और "दाल" पर पेश पढ़ेंगे तो अलग अलग मफ़हूम पर दलालत करेंगे।

इसी तरह लफ़्ज़े "मुहम्मद" है, ये किसी शख्सियत का नाम हो सकता है लेकिन सुरयानी जुबान में इस हर हर्फ़ एक मखसूस मफ़हूम पर दलालत करेगा।

मुख्तसर ये कि दुनिया की तमाम जुबानें सुरयानी जुबान से निकली है और सुरयानी दीगर तमाम जुबानों की असल है दीगर जुबानों के वजूद में आने की वजह ये है कि लोगों में जहालत आम हो गयी जब कि सुरयानी में गुफ़्तगू करने के लिये मारिफ़त पहली शर्त है, ताकि सुनने वाले को हर हर्फ़ के ज़रिए इस के मखसूस मफ़हूम का पता चल जाये लिहाज़ा सुरयानी जुबान ईजाद करने वालो ने इस बात का एहतिमाम किया कि मुख्तसर तौर पर ऐसी जुबान ईजाद की जाए जिस के हुरूफ़ -ए- तहज्जी वसी माना पर दलालत कर सके क्योंकि मुखातिब को फायदा उस वक़्त हासिल होगा जब उसका ज़हन आप के मतलुबा माना की तरफ़ मुन्तक़िल होगा, क्योंकि बेशतर उमूर माना से मुताल्लिक़ होते हैं, यहाँ तक कि बिल्फ़र्ज़ अगर ये मुमकिन होता कि आप अल्फ़ाज़ व हुरूफ़ का सहारा लिए बग़ैर अपना माना मुखातिब को मुंतक़िल कर सकें तो कभी भी किसी जुबान को ईजाद करने की ज़रूरत पेश न आती, यही वजह है कि सिर्फ़ अकाबिर अहले कश्फ़ या अरवाह या फ़रिश्ते इस जुबान में गुफ़्तगू करते हैं, अगर आप उन्हें ये जुबान बोलते हुये सुन लें तो ये महसूस होगा जैसे वो एक या दो

हुरुफ़ में अपना मुद्दा वाज़ेह कर देते हैं या चंद अल्फ़ाज़ में इतना कुछ बयान कर देते हैं जिसे बयान करने के लिए दूसरी जुबान में कई रजिस्टर दरकार होंगे।

अब आप को अंदाज़ा हो जायेगा कि जब इन्सानों में जहालत आम हो गयी तो इन हुरुफ़ को दीगर मानों की तरफ मुंतक़िल कर दिया गया और इन हुरुफ़ की हैसियत मुहमल अल्फ़ाज़ की मानिंद हो गयी और ये दस्तूर चल निकला कि मुख्तलिफ़ हुरुफ़ को मिला कर, लफ़ज़ की शक्ल दे कर मफ़हूम की वज़ाहत की जाये और फिर उन अल्फ़ाज़ को जुमलों की शक्ल में इस्तेमाल किया जाने लगा, इस तरह एक बहुत अज़ीम इल्म मफ़कूद हो गया लेकिन इस के बावजूद आप दुनिया की किसी भी जुबान का कोई भी लफ़ज़ ले लें उसका कोई एक हर्फ़ सुरयानी के मुहावरे से ज़रूर मुताबिक़त रखता होंगा यानी जो लफ़ज़ किसी मख़सूस माना के लिए ईजाद किया गया है, उसी लफ़ज़ का एक हर्फ़ सुरयानी जुबान में उसी माने की वज़ाहत के लिए इस्तिमाल होता होगा, जैसे अरबी जुबान में लफ़ज़ "हायित" दीवार के माने में इस्तिमाल होता है, लेकिन सुरयानी जुबान में इसका पहला हर्फ़ "हा" इसी माने में इस्तिमाल होता है। अरबी जुबान में पानी के लिए लफ़ज़ "मा'अ" इस्तिमाल होता है जबकि सुरयानी जुबान में इस के आखिर में आने वाला "हमज़ा" पानी के लिए ईजाद किया गया है। अरबी जुबान में आसमान के लिए लफ़ज़ "समा" मौजूद है और सुरयानी जुबान में इस के मानी के लिए सिर्फ़ "सीन" इस्तिमाल होता है, गर्ज़े कि अगर आप तहक़ीक़ करे तो आप को कुछ पता चल जायेगा कि हर लफ़ज़ का कोई हर्फ़ मख़सूस फ़हम की अदायगी के लिए काफी होता है और बकिया हुरुफ़ खामख्वाह इस्तेमाल किये जाते हैं।

हज़रते आदम अलैहिस्सलाम जब ज़मीन पर तशरीफ़ लाये तो अपनी ज़ौजा -ए-मुहतरमा और बच्चों के साथ सुरयानी में गुफ़्तगू किया करते थे।

हज़रते इदरीस अलैहिस्सलाम के ज़माने तक इसमें कोई तब्दीली नहीं आयी लेकिन उसके बाद तब्दीली का अमल शुरू हो गया और दीगर बहुत सी जुबाने वुजूद में आ गयी, उसमें सबसे पहले हिन्दी (संस्कृत) जुबान वजूद में आयी और ये सुरयानी जुबान से खासी क़रीब है।

हज़रते आदम अलैहिस्सलाम सुरयानी जुबान में इसलिये गुफ्तगू किया करते थे क्योंकि अहले जन्नत की जुबान सुरयानी है और हज़रते आदम अलैहिस्सलाम भी जन्नत में यही जुबान बोला करते थे।

(انظر: الابريز من كلام سيدى عبدالعزیز)

## अब्दे मुस्तफ़ा

### पबजी

जवानों की महफ़िल में हमेशा कुछ ना कुछ चर्चे में रहता है, अभी एक मोबाइल गेम है "पबजी" जिस के पीछे घंटो बर्बाद किये जा रहे हैं, इस क़दर दीवाने हैं इस गेम के, के घर में पबजी, बाहर पबजी, दिन में पबजी, रात में पबजी!

खेलते तो हैं ही और जब दोस्तों से मुलाकात करते हैं तो बस इसी की बातें करते हैं। जितनी मेहनत, वक़्त और दिमाग़ इस खेल में खर्च किया जाता है, अगर उस का आधा भी पढ़ाई में लगाया जाए तो बहुत फायदा होगा, जितनी मुहब्बत इस खेल से है अगर उतनी मुहब्बत किताबों से की जाए तो ज़िंदगी सवर जाए।

कई ऐसे हैं के पबजी में बन्दूक में गोली भरने का तरीका, हथियार बदलने का तरीका और फालतू के फर्ज़ी दुश्मनों को मारने का तरीका तो मालूम है लेकिन अफसोस के इस्लाम के बुनियादी अक़ाइद नहीं मालूम!

पबजी गेम तो आज आया है, इस से पहले कैंडी क्रश, मारियो, कॉण्ट्रा, लूडो, कैरम बोर्ड वगैरा के मजनू पाए जाते थे और आज भी हैं यानी हमेशा कोई ना कोई फ़ुज़ूल काम मिल ही जाता है।

नौजवान नस्ल को इन चीज़ों में मुब्तला करने के पीछे कई लोगों का हाथ है, अब किसी लड़के के वालिद को ही देख लीजिए, वो खुद बेनमाज़ी, बेइल्म और गाफ़िल है तो बेटे को "जुनैद व शिब्ली" कैसे बनायेगा।



बाप माँ को लगता है के बेटा नौकरी करने लगा है और हज़ारो रुपये कमा रहा है बस तरक्की काफी हो गयी, अब शादी कर दो ताकि इस के बच्चे भी यही तरक्की का मंजन खरीदने के लिए निकल पड़े।

ये नहीं देखा जाता है के बेटे के मोबाइल, उस के कम्प्यूटर, उस के फेसबुक प्रोफ़ाइल, उस के व्हाट्सएप्प मैसेंजर पर कौन से फूल खिल रहे है, अब हो सकता है के आप सोचे के माँ बाप तो भोले होते है, उन्हें क्या मालूम बेटा क्या कर रहा है?

हम कहेंगे के माँ बाप भोले नहीं बल्कि गैरज़िम्मेदार है और बच्चों की तरबियत के इस्लामी तरीके से बेखबर है।

बच्चों को स्कूल का रास्ता दिखाया, कॉलेजेस के चक्कर कटवाए हता के एक आधार कार्ड के लिए लाइन में घंटो खड़े रहेना सिखाया लेकिन मदरसे में तालीम हासिल करने के नाम पर खामोशी इस्तेयार की, उलमा की खिदमत में हाज़िर हो कर फ़ैज़ हासिल करने की बात आयी तो कान पर जू तक ना रेंगी।

लापरवाही की ही वजह है के औलाद कभी पबजी मे चिकन डिनर कर रही है तो कभी फेसबुक पर एक हज़ार फ़ॉलोवेर्स जमा करने की खुशी मना रही है, अल्लाह त'आला हमारे नौजवानों को इन फ़ुज़ूल चीज़ों से बचाये और आने वाली नस्लो की तरबियत पर काम करने की सलाहियत अता फरमाए।

## अब्दे मुस्ताफ़ा

### ज़ईफ़ रिवायात फ़ज़ाइल में मक़बूल हैं लेकिन

जब हम किसी रिवायत के बारे में बताते हैं कि ये सख्त ज़ईफ़ है या मौज़ू है तो वायिज़ीन व खुत्बा की तरफ से फ़ौरन जवाब आता है कि "फ़ज़ाइल में सब कुछ चलता है" और इसके बाद हम कुछ कहें तो हमारी सुन्नियत पर ही हमला शुरू हो जाता है।

हज़रत अल्लामा मौलाना उसैदुल हक़ क़ादरी बदायूनी लिखते हैं कि हमारे मुक़र्रीन ने उसूल -ए- हदीस का ये क़ाइदा कहीं से सुन लिया है कि "फ़ज़ाइल में ज़ईफ़ हदीस भी मक़बूल होती है" और इस क़ाइदे के बे महल इस्तिमाल से मौज़ू और गैर मुअ़तबर

रिवायात के लिये इतना बड़ा दरवाज़ा खुल गया कि हर क्रिस्म की रिवायतें इस क़ाइदे की दुहायी देकर बयान की जाने लगी।

इसमें कोई शक नहीं कि ये क़ाइदा अपनी जगह दुरुस्त है लेकिन इसके इतलाक़ का भी एक दायरा है और इसके इस्तिमाल के कुछ शराइत हैं जिनको इम्मा वा उलमा ने बयान कर दिया है, लेकिन जब ये क़ाइदा कम इल्म मुकर्ररीन के हथे चढ़ा तो नतीजा ज़ईफ़ फिर ज़ईफ़ -ए- शदीद फिर मुनकर और आखिर में मौजू रिवायत की क़बूलियत की सूरत में निकला।

(मज़ीद लिखते हैं कि) जो अहादीस वाक़यी क़ाबिल -ए- रद्द थीं हमने उसे भी क़बूल कर लिया।

(انظر: نقد و نظر، ص 11، ملخصاً)

बात बात पर इस क़ाइदे की रट लगाने वाला ज़रा होश के नाखून लें और हर रिवायत को ज़बरदस्ती फ़ज़ाइल में ढकेलने का काम ना करें।

**अब्दे मुस्तफ़ा**

**ये शान -ए- अली हैं ज़रा संभल कर**

हज़रते सैय्यिदुना अली रदिल्लैह त'आला अन्हु फरमाते हैं के मेरे बारे में दो तरह के आदमी हलाक हो जाएंगे, एक हद से ज़्यादा मुहब्बत करने वाला जो मेरी ऐसी शान बयान करेगा जिसका मैं हक़दार नहीं और दूसरा मुझ से बुग़ज़ रखने वाला जिसे मेरी दुश्मनी मुझ पर बोहतान लगाने पर आमादा करेगी।

(مسند احمد، مشکوٰۃ، مرقات و مرآة المناجیح)

राफ़ज़ी और उन के छोटे भाई तफ़ज़ील तो इस मर्ज़ में मुब्तला है ही लेकिन आज कल खुद को अहले सुन्नत कहने वाले कुछ अफ़राद भी इस वायरस की ज़द में हैं। खुद को मुहिब्बे अली व अहले बैत साबित करने के चक्कर में अहले सुन्नत के मौकिफ़ पर ही फतवे जारी फ़रमा रहे हैं। तफ़ज़ीलियत से बेज़ारी और नफरत का इज़हार तो करते हैं लेकिन उनकी खुद की बातों से तफ़ज़ीलियत की बू आती है।

अभी मौलूद -ए- काबा के मस'अले पर ही खुद को "मोतबर उलमा -ए- अहले सुन्नत" कहलाने वाले चंद हज़रात ने ये ज़हर उगला है के जो हज़रते अली रदिल्लाहु त'आला अन्हु की विलादत खाना -ए- काबा में होने का इनकार करे वो बुग्ज़े अली व बुग्ज़े अहले बैत में मुब्तला है और खानदान -ए- रसूल की तनक़ीस का पहलू तलाश कर रहा है

इन मुअतबर उलमा (जो कि अस्ल में एक मुकर्ररि से ज़्यादा नहीं) को चाहिए था के शाख काटने से पहले ये देख ले कि खुद की तशरीफ़ किस शाख पर जमी हुई है लेकिन आव देखा ना ताव फायरिंग शुरू कर दी और अंजाम ये हुआ के सुरीन जमीन पर आ गिरी।

इन्हें चाहिए था कि इस तहकीकी मस'अले में टांग ना अड़ाए क्योंकि कहते हैं "जिसका काम उसी को साजे" लेकिन दिल है कि कभी कभी ज़लील करवा कर ही छोड़ता है। अगर इन की ये बात तस्लीम कर ली जाए कि "जो हज़रते अली को मौलूद -ए- काबा न माने वो बुग्ज़.....अलख" तो फिर सैकड़ों अकाबिरीन -ए- अहले सुन्नत को दुश्मन - ए- अहले बैत करार देना होगा जिन में इमाम जलालुद्दीन सुयूती, इमाम नववी, इमाम शमशुद्दीन मुहम्मद, इमाम मुहम्मद बिन अली शाफ़ई, इमाम शहाबुद्दीन खिफ़ाजी, अल्लामा हुसैन दयार बाकरी, इमाम बहाउद्दीन मक्की, अल्लामा हलबी, इमाम इब्ने असाक़ीर, अल्लामा जमालुद्दीन अफ़्रीकी वगैरा समेत दीगर कई उलमा शामिल है! अगर ज़्यादा दूर न जाये तो सदरुशशरिया, हज़रत अल्लामा मुफ़्ती अमजद अली आज़मी, फ़कीह -ए- मिल्लत, हज़रत अल्लामा मुफ़्ती जलालुद्दीन अहमद अमजदी, हकीमुल उम्मत, मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी अलैहिमुर्हमा पर बुग्ज़ -ए- अहले बैत का फतवा लगा कर दिखाए (जो अनजाने में आप लगा भी चुके है) ताकी आप को मुहिब्बे अहले बैत का अवार्ड दिया जा सके।

अहले सुन्नत व जमा'अत एतिदाल पसंद है लिहाज़ा अपनी शिद्दत पसंदी को इसमें शामिल करने और इस पर मुहब्बत -ए- अहले बैत का लेबल लगा कर दुसरो पर

कीचड़ उछालने की कोशिश न करे, ये हमारी गुज़ारिश है और इसी में आप की सलामती भी है वरना जब गिरफ्त होगी तो कई हाथ ज़द में आएंगे।

**अब्दे मुस्तफ़ा**

**कोई हद नहीं**

हज़रते इमाम बौसिरी रहिमहुल्लाहु त'आला लिखते है :

دع ما اذعته النصارى في نبهم  
واحكم بماشئت مدحوا وحكم

وانسب الى ذلله ماشئت من شرف  
وانسب الى قدره ماشئت من عظم

فان فضل رسول الله ليس له  
حد فيعرب عنه ناطق بقم

"जो ईसाइयो ने अपने नबी के बारे में कही उसे छोड़ कर बाकी हर तरह अपने हबीब ﷺ की शान बयान कर, आप की ज़ात की तरफ हर शर्फ़ और हर अज़मत को बिला झिझक मंसूब कर दे, आप की फ़ज़ीलत और शान की कोई हद नहीं फिर आप की तारीफ़ का हक़ कोई किस तरह अदा कर सकता है"

(ملخصاً: تجھ سا کوئی نہیں، ص 6)

तेर तो वस्य़ फ़ब -फ़- तनाही से है बरी  
हैरा हूँ मेरे शाह मैं क्या क्या कहूँ तुझे

**अब्दे मुस्तफ़ा**

## तो फिर कौन कहेगा?

खतीब साहिब से तक्ररीर के बाद सवाल किया गया कि हज़रत आपने जो रिवायत बयान की वो किस किताब में है? बड़ा तहक़ीक़ी जवाब आया कि मैं ने हज़रते फुलॉ साहिब से सुनी थी.....,

जब अर्ज़ किया गया कि रिवायत मौजूब वा मनघढ़त है तो जनाब ने ऐसी बातें कह डाली कि आपको किसी किताब में नहीं मिलेंगी! फरमाने लगे कि क्या आपने तमाम किताबें पढ़ ली हैं जो इसे मौजूब कह रहे हैं या आप हज़रते फुलॉ साहिब से ज़्यादा इल्म रखते हैं?

ये बातें कुछ मुकर्रिरीन और आम लोगों से भी सुनने को मिलती रहती हैं कि क्या आप फुलॉ से ज़्यादा जानते हैं या आपने तमाम किताबें पढ़ ली हैं.....?

हम इस पर ज़्यादा लम्बी चौड़ी बहस ना करते हुये सिर्फ़ एक सवाल करना चाहते हैं कि अगर किसी रिवायत को मौजूब कहने के लिये दलाईल नहीं बल्कि किसी हज़रत से ज़्यादा इल्म रखना या तमाम किताबें पढ़ना ज़रूरी है तो फिर कौन सा ऐसा शख्स है जिसने तमाम किताबें पढ़ ली हैं या वो किसी से ज़्यादा इल्म का दावा कर सकता है? अगर कोई ऐसा शख्स नहीं है तो फिर किसी भी रिवायत को मौजूब नहीं कहा जा सकता क्योंकि हो सकता है वो किसी किताब में मौजूद हो, इससे तो झूठी रिवायात को क़बूल करने का दरवाज़ा खुल जायेगा!

ऐसी बातें करने वालों को चाहिये कि ये भी बता दें कि जब हम दलाईल के साथ नहीं कह सकते तो फिर कौन कहेगा?

**अब्दे मुस्तफ़ा**

## क़ब्रे रसूल की तस्वीर

सोशल मीडिया पर कुछ तस्वीरें ये कह कर शेयर की जाती हैं कि ये क़ब्रे रसूल ﷺ की तस्वीर है, आज एक क़ब्र की तस्वीर तो कल दूसरी क़ब्र की.....,

ऐसा करने वाले शोहरत के भूखे हैं या अक़ीदत में अन्धे हो चुके हैं, ये तो नहीं कहा जा सकता लेकिन हम ये ज़रूर कहना चाहेंगे कि ये एक निहायत ही ग़ैर ज़िम्मेदाराना काम है।

ये तस्वीरें सहीह कैसे हो सकती हैं जब कि हुज़ूर ﷺ की क़ब्रे मुबारक तक जाने का फिल्हाल कोई रास्ता ही नहीं है! इसकी तफ़सील कुछ यूँ है :

- (1) रसूलुल्लाह ﷺ वा शैख़ैन करीमैन के मज़ारात के गिर्द चार दीवारी है।
- (2) ये चार दीवारी बिल्कुल बंद है, इसमें आने जाने का कोई भी रास्ता नहीं है।
- (3) इस चार दीवारी के गिर्द भी एक पाँच कोनो (5 कॉर्नर) वाली मज़बूत दीवार है जिस पर चादर डाल दी गयी है।
- (4) ये पाँच कोनों वाली दीवार भी बिल्कुल बंद है, इसमें भी आने जाने का कोई रास्ता नहीं है।
- (5) इस पाँच कोनों वाली दीवार के बाहर अब सुनहरी जालियाँ हैं जिन के अन्दर पर्दे लगे हैं।
- (6) खास हुजरा -ए- मुबारका और पाँच कोनो वाली दीवार के बिल्कुल नीचे सुल्तान नूरुद्दीन ज़न्गी अलैहिर्रहमा की बनायी हुई, सीसा पिलाई मज़बूत ज़मीनी दीवार मौजूद है।
- (7) खास हुजरा -ए- मुबारका और पाँच कोनो वाली दीवार के ऐन ऊपर सर सब्ज़ गुम्बद मज़ारात -ए- षलाषा से बरकतें लूट रहा है और पूरे आलम में लुटा रहा है।
- (8) अब कोई भी ऐसा रास्ता नहीं है कि बराहे रास्त कोई मज़ारात तक पहुँच सके और ये तमाम उमूर पहली सदी से लेकर ज़्यादा से ज़्यादा छठी सदी तक मुकम्मल कर दिये गये थे।
- (9) अगर किसी बादशाह या सदर या फिर किसी मख्सूस शख्सियत के लिये दरवाजा खोला जाता है तो वो फ़क़त पाँच कोनों वाली दीवार के बाहर तक ही जाते हैं ना कि खास मज़ारात तक।
- (10) जब अन्दर जाने का रास्ता था उस वक़्त ये केमरा इजाद नहीं हुआ था और जब केमरा आया तो इससे काफी पहले रास्ता बंद हो चुका था लिहाज़ा ये तस्वीरें औलिया -ए- किराम की हैं जिन्हे हुज़ूर ﷺ की तरफ़ मन्सूब किया जाता है।

**अब्दे मुस्तफ़ा**



## डॉ. इक़बाल

बदरुल उलमा, हज़रत अल्लामा मौलाना बदरुद्दीन अहमद सिद्दीकी अलैहिर्रहमा, डॉ. इक़बाल के बारे में लिखते हैं :

रज़वी दारुल इफ़ता, बरेली शरीफ में एक इस्तेफ़्ता पेश किया गया जिस में डॉ. इक़बाल के कुछ (कुफ़्रिया) अश'आर के मुताल्लिक़ सवाल किया गया था तो मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद आज़म ने (फतवे में) उन अश'आर को कुफ़्रिया करार दिया और काईल (यानी डॉ. इक़बाल) के बारे में तहरीर किया के मैंने हुज़ूर मुफ़्तीये आज़म - ए- हिन्द, अल्लामा मुस्तफ़ा रज़ा खान अलैहिर्रहमा से डॉ. इक़बाल के बारे में दरियाफ़्त किया तो आप ने फरमाया :

बेशक इक़बाल से खिलाफ -ए- शरह उमूर का सुदूर हुआ है, कुफ़्रियात तक उस से सादिर हुए हैं मगर वो अल्लाह त'आला के महबूब, सरकार -ए- दो आलम ﷺ की शान में गुस्ताख़ व बेअदब नहीं था बेशक जहालत की बिना पर उस से कुफ़्र तक पहुँचने वाली गलतियाँ हुई हैं मगर आखिर वक़्त में मरने से पहले उस की तौबा भी मशहूर है और जो अल्लाह के महबूब की शान में गुस्ताख़ नहीं होता उस को तौबा की तौफ़ीक़ होती है उस के बाद हुज़ूर मुफ़्तीये आज़म -ए- हिन्द ने इक़बाल का ये शेर पढ़ा :

بمصطفیٰ برسائے خویش را کہ دیں ہمہ اوست  
گر باو نہ سیدی تمام بولہی است

ये शेर पढ़ कर हज़रत की आंखों में आंसू भर गए और फरमाने लगे के इस शेर से हुज़ूर ﷺ के साथ इक़बाल की सच्ची मुहब्बत ज़ाहिर है, उस के बाद फरमाया के इक़बाल के बारे में तवक्कूफ़ चाहिए और हज़रत का ये फरमान नासाज़ीये तबा से 15-16 साल पहले का है और हज़रत के इस फरमान पर हमारा अमल है।

(فتاویٰ بدر العلماء، ص 126، 229، ملخصاً)

खलीफा -ए- हुज़ूर मुफ़्तीये आज़म -ए- हिन्द हज़रत अल्लामा मुफ़्ती शरीफ़ुल हक़ अमजदी अलैहिर्रहमा, डॉ. इक़बाल के एक शेर की तावील करते हुए लिखते हैं के हमें हुक्म है के मोमिन के कलाम को अच्छे मानो पर महमूल करना वाजिब है।

(فتاویٰ شارح بخاری، ج 2، ص 486، ملقطاً)

आप रहिमहुल्लाहू त'आला एक और मक़ाम पर लिखते हैं के इक़बाल की तौबा मशहूर है, बहुत से मुस्तनद आलिमो ने उस की (तौबा की) रिवायत भी की है इस लिए इस बारे में सुकूत किया जाता है।

(فتاویٰ شارح بخاری، ج 3، ص 491، ملقطاً)

## अब्दे मुस्तफ़ा

### ये कोई नई बात नहीं

जब हम झूठे मुकर्रिरीन और ऐसे नाम निहाद उलमा का रद्द करते हैं जिन्होंने अपने अफ'आल से दीन को नुक़सान पहुंचाया है और उलमा की जमा'अत को बदनाम किया है तो कुछ लोग जिनको शायद अपनी दुकान की फिक्र है, हमसे कहते हैं कि ये उलमा की तौहीन है और तुम उलमा -ए- किराम के गुस्ताख हो.....!

ये कोई नई बात नहीं है बल्कि उलमा -ए- मुतक़द्दिमीन के साथ भी ऐसा हुआ है कि उन्हें इन दो नम्बरों का रद्द करने की वजह से बुरा भला कहा गया और तकलीफें दी गयीं चुनान्चे :

मशहूर ताबई, इमाम शयबी अलैहिर्रहमा ने जब एक मुकर्रिर से भरे मजमे में फरमाया कि "अल्लाह से डर और झूठी रिवायत बयान मत कर" तो उस मुकर्रिर ने इमाम शयबी से कहा कि ए बद किरदार तू मेरा रद्द करता है और फिर जूता उठाकर इमाम शयबी को मारने लगा फिर पूरा मजमा इमाम शयबी पर टूट पड़ा!

(- تحذیر الخواص من اکاذیب القصاص، امام جلال الدین سیوطی، ص 203، 204

- والقصاص والمذکرین، علامہ ابن جوزی، ص 302، 303

- والاسرار المرفوعة فی الاخبار الموضوعة المعروف بالموضوعات الکبری، ملا علی قاری، ص 85، 86

وموضوعات کبیر، مترجم، ملا علی قاری، ص 64، 65)

अगर आज ऐसों का रद्द करने का हमें बुरा भला कहा जाता है तो ये कोई नई बात नहीं है।

## अब्दे मुस्तफ़ा

### कोई वक़्त भी होता है

अल्लामा इब्ने जौज़ी लिखते हैं कि बसरा में एक शख्स करीबुल मर्ग (मौत के करीब) था।

एक शख्स आया और मरने वाले से कहने लगा :

ए फुलाँ! इस तरह कहो "ला इलाहा इल्लल्लाहु" और अगर चाहो तो यूँ कहो "ला इलाहा इल्लल्लाहा" (यानी लफ़्ज़े अल्लाह को ज़बर के साथ पढ़ो) अलबत्ता पहली सूरत (यानी लफ़्ज़े अल्लाह को पेश के साथ) पढ़ना इमाम सैबुविया के नज़दीक ज़्यादा अच्छा है। ये सुनकर अबुल ईना ने कहा कि ये कन्जरी की औलाद नज़ा की हालत में, मरने वाले पर नहवियों के क़ौल पेश कर रहा है।

(ملخصاً: أخبار الحمقى والمغفلين، مترجم، ص 192، 193)

हर काम के लिये एक सहीह वक़्त होता है और मुनासिब जगह भी।

अगर आपके पास इल्म है तो उसे ऐसी जगह बयान करें जहाँ उसकी ज़रूरत हो, अगर आप भी मज़कूर शख्स की तरह मरने वाले के सामने अरबी ग्रामर के क़वाइद बयान करेंगे या ना अहल लोगों के सामने इल्म झाड़ेंगे तो आपको "अहले इल्म" में नहीं बल्कि "कन्जरी की औलाद" में शुमार किया जायेगा।

## अब्दे मुस्तफ़ा

# OUR OTHER PAMPHLETS

